INTONATION

सुरलहर

ध्वनि विज्ञान में जितना महत्व उच्चारण का है उतना ही महत्व सुरलहर का ही है। ध्वनि विज्ञान में सुरलहर के अतिरिक्त बलाघात तथा सुर का भी अध्ययन किया जाता है।
एक शब्द की सभी ध्वनियों पर भी बराबर बल या आघात नहीं पड़ता। भाषा की कोई भी ध्वनि बलाघात नहीं होती। बलाघात के कई भेद है - ध्वनि बलाघात, अक्षर बलाघात, शब्द बलाघात एवं वाक्य बलाघात।
भोलानाथ तिवारी ने बलाघात की परिभाषा :—

" "बलाघात मूलत : शक्ति की वह मात्रा है जिसमें ध्वनि, अक्षर, शब्द या वाक्य का उच्चारण किया जाता है और शक्ति, अधिकता के कारण ही अपेक्षाकृत अधिक बलाघात ध्वनि, अक्षर या शब्द अपने आसपास की अन्य ध्वनियां आदि से अधिक मुखर एवं शक्तिशाली होती है।"

बलाघात के अध्ययन से पता चलता है कि जिस प्रकार सभी ध्वनियां समान रूप से नहीं बोली जाती उसी प्रकार सभी ध्वनियां एक स्वर में नहीं बोली जाती है। संगीत के सरगम की तरह उसमें स्वर ऊँचा - नीचा होता रहता है। सुर का सम्बन्ध स्वर यन्त्र में है और स्वरतन्त्रियों की प्रति सेकण्ड कम्पन आवृत्ति पर निर्भर करता है। सुर का सम्बन्ध केवल बोल ध्वनियों से है। सुर की दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति की अपनी निम्नतम एवं उच्चतम सीमा होती है। सुर का उतार-चढ़ाव उसी के बीच में होता है। इसके तीन भेद प्रचलित है - उच्च मध्य एवं निम्न। सुर स्वरतन्त्रियों के कमी के कारण उत्पन्न एक ध्वनि गुण है। शब्दों में कई प्रकार के सुर मिलते है।

Scanned by TapScanner

और वाक्य में तो और भी अधिक स्वर मिलते हैं। दो या दो से अधिक सुरों का उतार-चढ़ाव या आरोह अवरोह सुरलहर कहलाता है। सुरलहर का निर्माण दो या दो से अधिक सुरों से होता है। ऐसा एक प्रकार से भी सम्भव है। एक शब्द और एक वाक्य के सुरों के आरोह-अवरोह का क्रम ही सुरलहर है। सुरलहर के दो भेद होते हैं - शब्द सुरलहर तथा वाक्य सुरलहर।

भाषा में सुरलहर के बहुत से कार्य हैं। सुरलहर का एक प्रमुख कार्य है भावानुकूल वाणी में स्वर के उतार-चढ़ाव द्वारा स्वर-माधुर्य (Modulation voice) को बनाए रखना। इसके अलावा - भावुकता, दुःख, विवशता, क्रोध, घृणा, सहानुभूति आदि मानसिक अवस्थाओं की जानकारी देने के लिए भी सुरलहर का प्रयोग किया जाता है।

अतः आज ध्वनि विज्ञान की नवीनतम खोजों ने उच्चारण शिक्षण में महत्वपूर्ण योगदान किया है। यान्त्रिकी ध्वनि विज्ञान की सहायता से ध्वनि किस स्थान से और किस प्रकार उत्पन्न होती है। इसका ठीक-ठीक ज्ञान हो जाता है। वाक्य का उच्चारण करते समय कहाँ कितना बल दिया जाये, कहाँ कैसी सन्धि की जाये, सुरलर का कैसा प्रयोग किया जाये इन सब बातों की जानकारी इस यान्त्रिकी के आधार पर ठीक से प्राप्त कर ली जाती है। इस यान्त्रिकी के उदाहरणस्वरूप टेपरिकार्डर एवं भाषा प्रयोगशाला के महत्व को आसानी से शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से समझा जा सकता है।

Scanned by TapScanner